अजायब बानी

मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–आठवां	दिसम्बर–2025

3
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सच्चा साथी

17
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल–जवाब

21
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया गया एक संदेश
भजन

27
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा भजन में बिठाने से पहले दिया गया एक संदेश
किसी को अपनी तरक्की न बताएं

31
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश
विदाई संदेश

32
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 285 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

04 दिसम्बर 1994

सच्चा साथी

DVD-296

गुरु नानकदेव जी व चरनदास जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम, राज.

मैं उस परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया, अपनी भक्ति का दान दिया और अपना यश करने का मौका दिया।

पंजाब में गुरु नानकदेव जी और दस गुरुओं ने परमात्मा की भक्ति का प्रचार किया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सन्त–महात्मा किसी के अंदर से एक–दो भ्रम निकालकर जाते हैं तो हम दुनियादार अजीब अक्ल के मालिक होते हैं अनेकों भ्रम डालकर बैठ जाते हैं।'' हम जिन महात्माओं के नाम पर समाज चलाते हैं, मन के पीछे लगकर रीति–रिवाज करते हैं, महात्माओं की बानी में उनका खंडन होता है। हम गुरु नानकदेव जी के उपदेश को भूल गए, उन्होंने पंडितों के लिए कहाः

पड़ि पंडितु अवरा समझाए, घर जलते की खबरि न पाए।।

पंडितों की जगह भाईयों ने ले ली। आज हम गुरु नानकदेव जी बानी को सिर्फ पढ़ते ही हैं। पंजाब में गुरु नानकदेव जी का उपदेश यहाँ तक भूल गए कि हर एक पत्थर पूजक बन गया। खासकर दोआबा एरिया में तो कोई सुल्तान की पूजा करने लगा, किसी ने जोत जगाने पर जोर दे दिया, किसी ने ढोल–ढम्मके और रोट पकाने पर ही जोर दे दिया।

महाराज सावन सिंह जी का संसार में उस समय आगमन हुआ जब लोग पत्थर पूजकर पत्थर की तरह ही बन गए थे। उन्होंने आकर हमारी सोई हुई आत्माओं को जगाया और बताया कि गुरु नानकदेव जी की बानी हमें क्या कहती है। मैं जब विश्व टूर पर गया तो मैंने सबको प्यार से यही कहा, ''प्यारेयो, मेरा अपना कोई मिशन नहीं, यह मिशन उन महापुरुषों

सावन, कृपाल का है। मुझे जो प्यार और नॉलेज उनके चरणों में बैठकर प्राप्त हुई, वही प्यार मैं आपके साथ साझा करने के लिए आया हूँ। मेरा अपना कोई उपदेश नहीं, यह सनतान से सनातन और पुरातन से भी पहले का है। जिसका प्रचार महात्मा आदि–जुगादि से करते आए हैं। गुरु नानकदेव जी या गुरु अंगददेव जी ने कोई नया उपदेश नहीं दिया।

सन्त–महात्मा पहले के ग्रंथों के उपदेश को ताजा कर जाते हैं। जब महात्मा चले जाते हैं तो हम लोग वहाँ कोई न कोई फिरका बनाकर उसका नाम रख देते हैं, एक दूसरे से लड़ते–झगड़ते हैं। परमात्मा फिर अपने प्यारे बच्चों को भेजते हैं। महात्मा की बानी किसी खास फिरके के लिए, किसी समाज या मुल्क के लिए नहीं, न ही कोई सन्त–महात्मा किसी मुल्क या समाज के लिए आते हैं। वे सारे संसार को अपना घर समझते हैं, सब कौमों को अपना ही समझते हैं, वे सबको एक समान प्यार करते हैं। यह हमारा भाग्य है कि हम उन महात्माओं की बानी को कितना समझते हैं।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। गुरु नानकदेव जी के पास उनके बहुत से सिक्खों ने विनती की, ''महाराज जी, हम दुनिया में जो रिश्ते–नाते बनाते हैं, जिनमें हम उलझे हुए हैं, क्या ये सच हैं?'' गुरु नानकदेव जी प्यार से बताते हैं कि हम यहाँ आकर जो संबध बनाते हैं, ये सब अस्थाई हैं। **सच्चा साथी** वही है जो सदा हमारे साथ जाए, वह परमात्मा हैं, वाहेगुरु हैं या जो उसके साथ मिलवाने के लिए परमात्मा की तरफ से महात्मा आते हैं, वे हमारे **सच्चे साथी** हैं। हम यहाँ अस्थाई रिश्तेदार बनाकर बैठे हैं जब मौत आती है तो उनमें से कोई भी हमारे साथ जाने के लिए तैयार नहीं होता।

नौशेरा में जल्लण जट्ट बहुत अच्छी कमाई वाले महात्मा हुए हैं, उन्होंने कहा, ''बेटों को बहुएं संभाल लेती हैं, बहनों को बहनोई ले जाते हैं, भाईयों को भाभियां संभाल लेती हैं। इतना कुछ तो हम बैठे हुए ही देख

लेते हैं। अब तो तू सच्चे साईं का नाम जप, शरीर के साथ हमारा संबंध उतनी देर ही है जब तक हम चलते-फिरते हैं।'' गुरु नानकदेव जी का शब्द इसे स्पष्ट करता है, यह शब्द गौर से सुनने वाला है।

ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह।।
सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमने परमात्मा से बिछुड़कर अनेकों बहनें और अनेकों भाई बनाए। हम पहले के बनाए हुओं को भूल गए तो आज वाले किसे याद रहेंगे। अनेकों सास बनाई अनेकों की हम सास बनें। **सच्चा साथी** परमात्मा हैं, वाहे गुरु हैं या जो गुरु से मिलवाने में मदद करते हैं वह सतगुरु हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलांनि।
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि।।

हमें पता हैं अगर कोई मुसीबत बनी हो, हम जंगल में किसी तगड़े जानवर शेर से घिरे हों उस समय अगर कोई हमारी मदद के लिए आ जाए तो हमें कितनी खुशी होती है। यही हालत मौत के वक्त होती है। उस समय घरवाले इतनी ही मदद करते हैं कि कुछ रखा हुआ है तो वह बता दे या वसीयत करवा दे। उसकी जान पर बनी होती है, वह बेचारा गिरगिट की तरह रंग बदलता है लेकिन हम उसे आराम से शरीर भी नहीं छोड़ने देते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मौत के समय सतसंगी को अपनी शादी से भी ज्यादा खुशी होती है। वह बहुत भयानक वक्त होता है, उस मुश्किल के वक्त में गुरु ही हमारा साथ देंगे जिनके कहने पर हमने 'शब्द-नाम' की कमाई की है।

बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ।।
गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ।।

अब आप एक बार नहीं करोड़ों बार गुरु पर बलिहार जाते हैं क्योंकि जब तक हमें गुरु नहीं मिले, नाम नहीं मिला तब से ही हम संसार में चक्कर लगा रहे हैं। कभी किसी जगह तो कभी किसी जगह जाकर जन्म लेते हैं। जहाँ भी जन्म लेते हैं वहाँ दुख और मुसीबतें खड़ी हैं। मैं गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, बलिहार जाता हूँ कि मैं जिस परमात्मा से बिछुड़ा हुआ था, गुरु ने नाम देकर मुझे उस परमात्मा के पास भेज दिया है।

फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह।।
आवन वंजनि ना रहनि पूर भरे पहीआंह।।

आप कहते हैं कि अनेकों देवरानियां, जेठानियां, फूफियां, नानियां बनाई, ये सब समूह में आते हैं और चले जाते हैं। जिस तरह हम दरिया को पार करने के लिए बेड़ी में बैठ जाते हैं, उस समय हम सब इकट्ठे होते हैं, जब हम पार उतरते हैं तो सब अपने–अपने रास्ते चले जाते हैं। मल्लाह की बेड़ी की तरह हम एक ही परिवार में इकट्ठे हो जाते हैं कोई बहन बनती है, कोई भाई बनता है, कोई चाचा–ताऊ बनता है। हम यहाँ अस्थाई रिश्ते बनाकर बैठ जाते हैं, जब लेन–देन खत्म हो जाता है तो हम अपने–अपने रास्ते पर चले जाते हैं। गुरु साहब कहते हैः

असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने इसे वृक्ष की मिसाल देकर भी समझाया है कि जिस तरह पक्षी रात को पेड़ के ऊपर आकर रैन बसेरा कर लेते हैं, कोई खट्टा बोलता है, कोई मीठा बोलता है। परिवार में हम देखते ही हैं कोई कड़वा बोलता है कोई मीठा बोलता है। किस तरह घरों में दिन–रात खटपटी मची रहती है, ये सब कर्मों की वजह से होता है। जैसे–जैसे हमारी जिंदगी की रात खत्म हो जाती है वैसे ही हम सुबह अपने–अपने रास्ते पर चले जाते हैं। न कोई किसी की बहन है न कोई किसी का भाई हैं इसलिए आप कहते हैं कि समूहों के समूह यहाँ आए और गए।

मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ।।

साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ।।

हमने अनेकों मामे बनाए अनेकों मामियां बनाई, हमने यहाँ अनेकों ही अस्थाई रिश्ते बनाए हुए हैं।

साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा हमारा पति है, आत्मा पत्नी है, पति और पत्नी का रिश्ता बयान किया है। आत्मा को सच्चा रंग सच्ची खुशी तभी होती है जब यह अपने कंत परमात्मा से जाकर मिल लेती है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

हरि की नारि सु सरब सुहागणि राँड न मैलै वेसे।।

जो आत्मा परमात्मा से मिल जाती है वह न रंडी होती है न उसका वेश ही मैला होता है। संसार के रिश्तों में तो हमें पता ही है कहीं पति चला गया तो पत्नी रोती–बिलखती फिरती है। कहीं पत्नी चली गई तो पति दुखी हुआ फिरता है, यहाँ किसी न किसी को बिछोड़ा पड़ा ही रहता है। गुरु नानकदेव जी का इशारा है कि असली रिश्ता आत्मा और परमात्मा का है। आत्मा सच्ची रंगरलियां वहां जाकर ही मना सकती है जब यह अपने कंत पति परमात्मा से मिल जाती है।

सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु।।

जब एक बार आत्मा का परमात्मा के साथ मिलाप हो जाता है फिर यह बिछुड़ती नहीं।

सभे रुत्ती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु।।

सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु।।

सेवकों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा महाराज, ''परमात्मा को याद करने के लिए कौन सी ऋुत अच्छी है, किस समय परमात्मा को याद करें?''

गुरु नानकदेव जी महाराज उन प्यारों को जवाब देते हैं कि सारी ऋतुएं अच्छी हैं। अगर बचपन में ख्याल परमात्मा की तरफ हो जाता है तो वह जीव भाग्यशाली है, दुनिया में ख्याल फैला हुआ नहीं होता। अगर जवानी में किसी का ख्याल इस तरफ आ जाता है तो उसे उसी समय लग जाना चाहिए। अगर बुढ़ापे में भी उसका ख्याल परमात्मा या गुरु की भक्ति की तरफ आ जाता है तो उसे उस समय भी फायदा उठा लेना चाहिए। ऐसा नहीं कि मैंने पहले तो विषय–विकारों और शराबों–कबाबों में उम्र बर्बाद कर ली, अब मैं इस तरफ आऊं ही नहीं।

आप कहते हैं, ''प्यारेयो, आपको बचपन में जवानी में या बुढ़ापे में जो भी समय मिलता हैं, आप परमात्मा की भक्ति करें। इससे कभी भी पीछे न हटें।'' गुरु नानकदेव जी तो यहां तक कहते हैंः

घुँघरू वाजै जे मनु लागै।

जब साँस नहीं आता अगर उस समय भी बंदे का ख्याल परमात्मा गुरु की तरफ जाता है तो उसकी संभाल जरूर होती है। ऐसी आत्मा धन्य है जिसने अपने कंत परमात्मा के साथ मिलाप कर लिया है।

पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि।।
पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि।।

जब दरिया पर मुसाफिर इकट्ठे हो जाते हैं तो मल्लाह घंटी बजाता है और आवाज भी देता है, ''मैं पार जा रहा हूँ, आओ बेड़े में सवार हो जाओ नहीं तो आपको फिर सारा दिन इंतजार करना पड़ेगा।'' जो बेड़े में बैठ जाते हैं वे पार हो जाते हैं जो सलाह करते रहते हैं, वे रह जाते हैं।

सच्चखंड पहुँचे हुए महात्मा सुनी सुनाई बात बयान नहीं करते, वे आँखों देखी बात करते हैं। सब महात्माओं का अपना तजुर्बा होता है, उन्होंने ठोक बजाकर देखा होता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं

कि मैंने आँखों से देखा है जो सतगुरु के नाम के बेड़े में चढ़ जाते हैं, वे पार हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

दीन दइआल भरोसे तेरे, सभु परवारू चड़ाइआ बेड़े।

उन्होंने परमात्मा को अपने ऊपर खुश किया होता है, मेहरबान किया होता है। हमें पता है कि प्यारे का प्यारा भी प्यारा होता है। अगर आपकी किसी बादशाह के साथ मुलाकात है, प्यार है तो आप सीधे ही जाकर उससे मिल लेते हैं। अगर हमारी किसी के साथ मुलाकात नहीं तो हम वहाँ चक्कर लगाते रहते हैं।

अब आप प्यार से कहते हैं कि सन्तों का बेड़ा हवा या आग से चलने वाला नहीं, पाँच तत्वों के किसी भी पदार्थ का बना हुआ नहीं, वह 'शब्द-नाम' का जहाज है।

हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि।।
जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि।।

आप प्यार से कहते हैं कि हम सब सलाह तो करते हैं कि हम परमात्मा की भक्ति करेंगे, सतसंग में जाएंगे, नाम भी लेंगे लेकिन पहुँचता वही है जिस पर परमात्मा कृपा करें, मेहर करें। परमात्मा के दर पर वही जाते हैं जो नाम का व्यापार करते हैं। सच बोलना ही सच नहीं, सच वह परमात्मा है जो कभी फनाह नहीं होता। जिन्होंने सच का व्यापार किया है वही परमात्मा के साथ शोभा पाते हैं।

ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ।।
नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ।।

गुरु नानकदेव जी प्यार से कहते हैं कि हम अपनी बड़ाई नहीं करते कि हम बहुत अच्छे हैं लेकिन हमें कोई बुरा भी नजर नहीं आता।

बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि।।
गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ।।

हम किसी को बुरा–भला तब तक ही कहते हैं जब तक हम दुविधा में फँसे हुए है।

दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम।

जब हमारी लिव परमात्मा से लग जाती है तो हमें समझ आती है कि परमात्मा सबमें बैठा है अगर हम किसी की निन्दा कर रहे हैं तो हम परमात्मा की निन्दा कर रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि हम अच्छे हैं लेकिन हमें कोई बुरा भी नजर नहीं आता। इंसान हौमें की रूकावट दूर करके इंसान से भगवान बन सकता है।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

हौमे ला–ईलाज बीमारी है। हम दिन–रात कहते हैं कि मैं आलिम–फाजिल हूँ, मेरा ओहदा सबसे बड़ा है, मैं गुणी ज्ञानी हूँ, मैं बहुत बड़ा धर्मात्मा हूँ यही हौमें है। सबको यह मीठी तपेदिक लगी है। इससे हम महात्मा के दिए हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करके ही छुटकारा पा सकते हैं।

धनि वे नर हरि दास कहाये। धनि वे नर हरि दास कहाये।
राम भक्ति दृढ़हि करि पकरी आन धर्म सबही बिसराये।।

मैं बताया करता हूँः सौ स्याणयां इको मत, मूर्खां आपो आपणी। आप किसी भी महात्मा की बानी पढ़ लें, सब महात्माओं का एक ही उपदेश है कि परमात्मा एक हैं उनके मिलने का साधन और तरीका भी एक है। परमात्मा हर एक के अंदर 'शब्द–रूप' होकर बैठा हुआ है, जिसे भी मिला है उसे अंदर से ही मिला है और जिसे मिलेगा उसे अंदर से ही मिलेगा। कबीर साहब कहते हैंः

बस्तु कहीं ढूँढै कहीं, केहि बिधि आवै हाथ।
कहैं कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ।।
भेदी लीन्हा साथ कर, दीन्ही बस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुंचा जाय ।।

अगर वस्तु हमारे घर के अंदर गुम है और हम उसकी तलाश बाहर बाजारों या सड़कों पर करें तो हम चाहे जितनी मर्जी खोज कर लें, हमारी खोज बेकार जाएगी। हमें कोशिश करनी चाहिए कि जहाँ वस्तु गुम है, उसे वहाँ ढूंढें। अगर हमने अमेरिका जाना है, हम सारा दिन अमेरिका की हिस्ट्री पढ़ते रहें कि किस तरह हमने दिल्ली से अमेरिका की फ्लाईट पकड़नी है, यह इंग्लैंड में बदलेगी, दुबई में बदलेगी या रोम में जाकर उतरेगी। कौन सा जहाज है, हमें किस समय मिलेगा अगर हम सारी जिंदगी गाईड बुक ही पढ़ते रहें, उसके मुताबिक सफर न करें तो हम घर में ही बैठे रहेंगे।

इससे आसान तरीका और भी है अगर कोई आदमी अमेरिका से आया है, वह वहाँ का वाकिफ है, वह उस मुल्क के कायदे कानून जानता है, वहाँ उसका घर है। अगर हम उसकी समझदारी से फायदा उठा लें तो कितना आसान होगा। टिकट लेकर बैठने की जरूरत है, वह सब चीजों का जिम्मेदार है, वहाँ हम आराम से अपने घर पहुँच जाएंगें।

परमात्मा ने संसार में हमेशा अपने प्यारे बच्चे महात्मा भेजे हैं। हम महात्माओं की बानियां तो दिन–रात तोते की तरह पढ़ते हैं, यह उस गाईड बुक पढ़ने की तरह है। हमने टाईम टेबल तो रोज पढ़ लिया, उसके कहे मुताबिक करना भी है। फर्ज करें अगर हम बीमार हैं, हम किसी अच्छी डाक्टर की लिखी हुई किताब पढ़ने लग जाएंगे तो क्या कभी बीमारी दूर होगी? नुख्से पढ़ लेंगे, याद भी कर लेंगे कि जुलाब लगा हो, संग्रहणी हो, दमा हो तो यह दवाई लेनी है अगर हम उस किताब को पढ़कर अलमारी में रख दें तो क्या बीमारी दूर हो जाएगी? बेहतर है कि हम जो नुख्से पढ़ते हैं, उसके मुताबिक दवाई भी बनाएं या किसी डाक्टर की मदद लेकर उससे बनी बनाई दवाई ले लें तो कितना आसान है।

गुरु नानकदेव जी से सिक्खों ने पूछा कि महात्मा की क्या पहचान है? यह सवाल महाराज सावन सिंह जी से भी पूछा था कि महात्मा की क्या पहचान है, हमें कैसे पता चले? महाराज जी ने हँसकर कहा, ''बताओ भई, क्या वे बोर्ड लगाकर रखें। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु।।

परमात्मा हमारे अंदर है और उसने रास्ता भी अंदर ही रखा हुआ है। जो महात्मा हमें इस शरीर के अंदर परमात्मा की दरगाह को जाने वाले रास्ते पर डाल दे, वही महात्मा है। इस पर कोई खर्च नहीं करना, कोई समाज नहीं बदलना, कोई कपड़े नहीं बदलने।

आप प्यार से कहते हैं कि हम आँखें बंद करते हैं तो अंदर अंधेरा है। कोई व्यक्ति बाहर गया आंधी आ गई, वह अपना घर भूल गया। अब वह भूला व्यक्ति कैसे पहुँच सकता है? अगर उसे घर की, गांव की, शहर की आवाज सुनाई दे जाए तो उसे पता चलता है कि मेरा घर इस तरफ है या मेरा शहर उस तरफ है। अगर उसके हाथ में कोई टार्च वगैरहा होती है तो वह आसानी से रास्ता तय कर सकता है।

परमात्मा ने हम सबके अंदर अपनी आवाज रखी हुई है, अपना प्रकाश रखा हुआ है ताकि उस प्रकाश के जरिए हमें पता चल सके कि हमारा रास्ता यह है, जहाँ से आवाज आ रही है हम वहाँ पहुँच जाएं। उसका हर महात्मा ने जिक्र किया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई।।

उन्होंने उस आवाज को गुरुबानी कह दिया, सबके अंदर जोत जल रही है। जोत के अंदर से आवाज आ रही है। जो उस बानी को पकड़ लेते हैं, वे अपने घर पहुँच जाते हैं। आप मुसलमानों की किताबें पढ़कर देख लें उनकी किताबों में भी लिखा हैः

पंजे महल पंजे विच चानण।

मालिक ने हर एक के अंदर प्रकाश रखा हुआ है। गुरु नानकदेव जी ने इसी शब्द में कहा था अगर हम हौमें की रूकावट दूर कर लेते हैं तो हम इंसान से भगवान बन जाते हैं।

आपके आगे महात्मा चरनदास जी की बानी रखी जा रही है, चरनदास जी राजस्थान में अलवर के नजदीक ढूसर कुल के डेहरा गाँव में पैदा हुए। ये बहुत कमाई वाले महात्मा थे। आप कहते हैं कि वे धन्य हैं जो इंसानी जामें में आकर नम्रता धारण करते हैं। नम्रता तब आती है जब हम रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण से ऊपर आ जाते हैं, अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतार देते हैं। जब अपने अंदर उस मालिक के दर्शन करते हैं तब पता चलता है कि सबके अंदर वही बैठा है। अब एक फिरके की दूसरे फिरके से नहीं बनती। एक कहता है कि हमारा फिरका मजबूत है, दूसरा कहता है कि हमारा फिरका मजबूत है।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे कि एक मकान में हजारों ही साधु रह सकते हैं लेकिन एक गाँव में दो सांड नहीं रह सकते। हम सांडो के झुंड की तरह हैं। सन्त सारे समाजों को इकट्ठा कर देते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ।।
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ।।

आपको ऐसे ही गलतफहमी है, परमात्मा एक है। परमात्मा से मिलने का साधन–तरीका एक है तो आप क्यों एक–दूसरे के साथ नफरत करते हैं।

राम भक्ति दृढ़हि करि पकरी आन धर्म सबही बिसराये।।

सन्त–महात्मा किसी समाज की निन्दा नहीं करते और न ही उनका यह मकसद होता है। वे मालिक के प्यारे धन्य हैं जो यहाँ आकर उनके दासों के दास बन जाते हैं, अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म के सारे पर्दे उतार देते हैं, उनका एक ही धर्म है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

सरब धरम महि स्रेसट धरमु, हरि को नामु जपि निरमल करमु।।

सब धर्मों में उत्तम धर्म परमात्मा की भक्ति करना है। जब परमात्मा की कोई जाति नहीं, कौम नहीं, मुल्क नहीं तो आत्मा की कौन सी जाति, कौन सा मुल्क या कौन सी कौम हो सकती है? सन्त–महात्मा संसार में आकर सारे रीति–रिवाजों को छोड़ देते हैं, जब सन्त रीति–रिवाज नहीं करते तो हम लोग उनकी मुखालिफत करते हैं। जो हमारे कहने के मुताबिक भक्ति नहीं करते तो उन्हें हम डंडे या तलवारों से डराते हैं। हमें उन्हें प्यार से समझाना चाहिए कि प्यारेयो, हमारा तरीका इस तरह है अगर आपकी समझ में आता है तो आप भी ऐसे ही करें।

मैं बताया करता हूँ कि मैंने अपने गुरुदेव के आगे आँखें भरकर कहा था कि मेरा किसी कर्म–धर्म या रीति–रिवाज में कोई विश्वास नहीं रहा अगर विश्वास है तो आपके बताए रास्ते पर है, आपके नाम पर है। हमें पता है कि लड़की का माता–पिता, बहन–भाई के साथ कितना प्यार होता है लेकिन जब वह पति के घर चली जाती है तो धीरे–धीरे सबका प्यार भूल जाती है। इसी तरह हमें भी जब सच्चाई मिल जाती है, नाम मिल

जाता है, हम उसके ऊपर चलना शुरु कर देते हैं तो अपने घर पहुँच जाते हैं फिर ये रीति–रिवाज गुड्डे–गुड्डियों के खेल की तरह लगते हैं।

आठ पहर गलतान भजन में प्रेम मगन हिय में हुलसाये।

आठ पहर सोते–जागते ध्यान में और जुबान पर गुरु का दिया हुआ सिमरन है, आँखों में गुरु स्वरूप है। वह दिन में गुरु की बातें करता है और रात को सोते हुए स्वपन भी गुरु के ही आते है। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु।।
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु।।

हम सपने में भी पकड़ो–पकड़ो, मारो–मारो करते हैं। लोगों को अपना सपना बताकर डरा देते हैं कि मुझे यह सपना आया। अगर भक्ति करेंगे, गुरु के साथ प्यार होगा तो सपने में भी गुरु ही मिलेंगे। गुरु साहब कहते हैंः

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर, गुरू बिना मै नाही होर।।

अगर आप गुरु का दिया हुआ नाम जपेंगे, गुरु–गुरु करेंगे तो आपको सपने भी गुरु के ही आएंगे, आपको दिन में भी यही खुशी होगी। आपको गुरु का सपना आएगा तो कई–कई दिन आपका दिल खुश रहेगा। जब बुरे सपने आते हैं तो आपका दिल उदास होगा। हमने महात्मा के सतसंग को गौर से समझना है, अपने जीवन को सफल बनाना है।

आप तरैं तारैं औरन कूँ बहुतक पापी पार लगाये।।
प्रभु दरसन बिन और न आसा धर्म काम अरु मोच्छ न चाहे।
आठौ सिद्धि फिरैं संग लागी नेक न देखैं नैन उठाये।।
तिन को ऋषि मुनि जाप करत हैं हरि जन हरि दोउ संगहिं गाये।
ऊँची पदवी इंदर हूँ ते देवन देखि अधिक ललचाये।।
कहें सुकदेव चरन ही दासा धनि माता ऐसे जन जाये।
जीवन सोभा जग में पाई तन छूटे हरि माहिं समाये।।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *मैं किस तरह कंठ की बजाय तीसरे तिल पर ध्यान लगाकर सिमरन कर सकता हूँ?*

बाबा जी: जब आपके अंदर विचार आते हैं उस समय आप सिमरन को बढ़ाने की कोशिश करें। आप जब भी कुछ सोचते हैं तो आपका ध्यान तीसरे तिल पर होता है, कंठ की तरफ नहीं होता क्योंकि तीसरे तिल पर मन और आत्मा की गाँठ होती है। जब हम कुछ याद करने की कोशिश करते हैं तो हमारा ध्यान तीसरे तिल पर ही जाता है इसी तरह आप सिमरन को तीसरे तिल पर टिकाने की कोशिश करें।

शुरू में आपको तीसरे तिल पर ध्यान लाने में मुश्किल हो सकती है अगर आप 'शब्द–नाम' को बार–बार दोहराएंगे और सारा दिन सिमरन करते रहेंगे तो आपका ध्यान अपने आप ही तीसरे तिल पर आ जाएगा। तीसरे तिल के साथ हमारा बहुत गहरा संबन्ध है क्योंकि यहाँ आत्मा की बैठक होती है और मन भी यहीं होता है। हम जब भी कुछ सोचते हैं तो हमारा ध्यान तीसरे तिल पर ही जाता है इसलिए जरूरी है कि हम तीसरे तिल पर ध्यान लगाकर सिमरन करें।

ज्यादातर सतसंगी जब भजन पर बैठते हैं तभी पाँच पवित्र नामों को जपना शुरू करते हैं, बाकी समय वे सिमरन नहीं करते। उन्हें सिमरन याद ही नहीं रहता, वे सिमरन की बजाय दुनियावी धंधों के बारे में सोचते रहते हैं इसलिए दुनियां के विचार उन पर हावी रहते हैं। अगर हम हर समय सिमरन करने की आदत बना लें तो हम आसानी से दुनियावी ख्यालों को रोक सकते हैं फिर दुनियावी ख्यालों की बजाय दिन भर हमारा सिमरन चलता रहेगा।

एक प्रेमी : *मैं भजन के दौरान अपना सारा ध्यान तीसरे तिल पर लगा देता हूँ और मेरा सारा ध्यान सिमरन पर होता है फिर भी मेरा ध्यान मन की तरफ चला जाता है?*

बाबा जी : आपको अपने ध्यान को तीसरे तिल पर टिकाकर लगातार सिमरन करना चाहिए।

एक प्रेमी : *मैंने कई बार घर पर और यहाँ भी देखा है कि अगर मैं सुबह उठकर फिर सो जाता हूँ तो मुझे स्वपन आते हैं और कामवासना वाले बुरे विचार आते हैं, क्या एक बार उठकर फिर सोना नहीं चाहिए?*

बाबा जी : जब आप एक बार भजन के लिए उठ जाते हैं तो फिर आपको सोना नहीं चाहिए। यह सच है कि जब सुबह के भजन के बाद आप सो जाते हैं तो आपको निश्चय ही बुरे ख्याल या बुरे सपने आते हैं। जब आप भजन पर बैठते हैं तो सिमरन कर रहे होते हैं और चारपाई पर लेटते ही सिमरन करना बंद कर देते हैं तो जो दुनियावी ख्याल आप पहले सोच रहे होते हैं उनको आपके ऊपर काबू पाने का मौका मिल जाता है।

इसलिए सारा दिन सिमरन करने की हिदायत दी जाती है अगर आप सारा दिन सिमरन करेंगे और भजन के बाद सो भी जाएंगे तो आपका सिमरन चालू रहेगा और आपको बुरे ख्याल नहीं आएंगे। अगर हम लगातार सिमरन की आदत बना लें तो हमारी हालत ऐसी हो जाएगी जैसा कि कबीर साहब कहते हैं, ''चाहे मैं जागूँ या सोऊँ सदा परमात्मा के चरणों में रहता हूँ।''

अगर आप इस तरह के सिमरन की आदत बना लें तो आपको ऐसी परेशानी नहीं होगी फिर चाहे आप भजन करने के बाद सो भी जाएं तो भी आपकी आत्मा शरीर में नहीं आती क्योंकि आप तीसरे तिल पर सिमरन कर रहे होते हैं और आत्मा तीसरे तिल पर रहती है। अगर हमारी लगातार सिमरन करने की आदत नहीं बनी है तो जब हम सो जाते हैं तो हमारी

आत्मा इन्द्रियों में चली जाती है। इस तरह हमारे जो ख्याल पहले होते हैं, उनका असर स्वपनों और बुरे ख्यालों के रूप में होता है।

एक प्रेमी : *जब आप मुझ पर दृष्टि डालते हैं तो मैं बहुत खुश होता हूँ। कभी–कभी आप बहुत ज्यादा देर तक दृष्टि डालते हैं तो मुझे आश्चर्य होता है?*

बाबा जी : हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''रूहानियत आँखों के द्वारा ली और दी जाती है, इसे हम अपनी ग्रहण शक्ति के अनुसार ही प्राप्त करते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''सन्तों की आँखों से अमृत बरसता है। जब गुरु शिष्य के ऊपर दृष्टि डाल रहे होते हैं तो गुरु शिष्य की आत्मा की सफाई कर रहे होते है।'' अगर हम पवित्र हैं, लगातार सिमरन करके खूब अभ्यास करते हैं तो हम सन्तों की दृष्टि की कीमत देख सकेंगे। सतगुरु हमें अपनी आँखों से जो दे रहे होते हैं वह सब कुछ हमारी सफाई में ही लग जाता है अगर हम पवित्र हैं तो हम सतगुरु के दर्शनों की कीमत को आसानी से जान सकते हैं। शिष्य की मुक्ति के लिए सतगुरु की एक दृष्टि ही काफी है।

हजरत बाहू कहते हैं, ''जब सतगुरु दया भरी दृष्टि से देखते हैं तो लाखों आत्माओं को तार देते हैं लेकिन लाखों ज्ञानियों की दृष्टि एक आदमी पर पड़े तो वह कुछ नहीं कर सकती।'' जिनकी आत्मा पवित्र होती है वही दर्शन की कीमत जानते हैं। गुरु अर्जुनदेव कहते हैं:

सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा।।
फिरदा कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ।।

स्वामी जी महाराज सतगुरु के स्वरूप की प्रशंसा करते हुए कहते हैं:

मेरे गुरु का दरस कोई देखे, हो जावे हूर परंद री।।

अगर कोई मेरे सतगुरु के सुंदर स्वरूप के दर्शन कर ले तो वह दुनियां के सुंदर चेहरों के दर्शन नहीं करना चाहेगा। अगर हम सतगुरु के

अंतरी स्वरूप के दर्शन कर लें तो हमें उस जैसा कोई सुंदर स्वरूप नहीं दिखेगा। भाई नंदलाल गुरु गोबिंद सिंह जी के भक्त थे। वे अपने गुरु के आगे विनती करते हुए कहते हैं:

तेरी इक नज़र है मेरी जिंदगी का सवाल है।

एक प्रेमी : *हम भजन के समय किस तरह बैठें, भजन पर बैठे हुए दर्द होता है, क्या यह भजन का एक हिस्सा है?*

बाबा जी : चाहे आप किसी भी तरह बैठें लेकिन जब आपने बैठकर भजन करना शुरू कर दिया तो आपको हिलना नहीं चाहिए। आप इस तरह बैठें कि आप लंबे समय तक बिना हिले–डुले बैठ सकें। अगर आप भजन के बीच में बैठने का तरीका बदलेंगे तो आपको फिर से भजन शुरू करना पड़ेगा जोकि ठीक नहीं। दर्द को सहन करने की कोशिश करें अगर आप दर्द को सहन नहीं कर सकेंगे और शरीर को हिलाएंगे तो आपकी आत्मा जो शरीर से ऊपर की ओर सिमटना शुरू होती है वह फिर वापिस नीचे शरीर में चली जाएगी और आपको फिर से अभ्यास शुरू करना पड़ेगा। बिना हिले–डुले बैठने की कोशिश करें।

बहुत से सवाल जो यहाँ पूछे गए हैं ये सवाल पहले भी कई बार पूछे गए हैं और इनमें से बहुत से सवाल मासिक पत्रिका में छप चुके हैं। इसलिए मैं आपसे विनती करूंगा कि आपको मासिक पत्रिका पढ़नी चाहिए ताकि आपको बार–बार सवाल न पूछने पड़ें। आप जब सतसंग में बैठते हैं तो सतसंग को ध्यान से सुनें तो आपको पता चलेगा कि आपके सारे सवालों के जवाब सतसंग में दिए जाते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया गया एक संदेश

भजन

मार्च, 1997 सांपला (हरियाणा)

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपनी याद में बैठने और अपना यश करने का मौका दिया है। वैसे तो इतिहास बताता है कि सन्तों का बच्चों के साथ बहुत लगाव होता है। बच्चे भोली आत्माएं होती हैं, इन पर इतनी मैल नहीं चढ़ी होती जितनी हम बड़े होते–होते चढ़ा लेते हैं।

मुझे दो महान हस्तियों के चरणों में बैठने का मौका मिला है। महाराज जी कहा करते थे कि अंधे में ताक़त नहीं कि वह आँखों वाले को पकड़ ले जब तक वह खुद ही दया करके अंधे को आवाज देकर अपनी उंगली उसके हाथ में नहीं पकड़ा देता। उन दोनों हस्तियों का बच्चों के साथ बहुत प्यार और लगाव था। जो काम माता–पिता नहीं कर सकते जैसे कि अंदर ख्याल को इकट्ठा करना और गुरु के दर्शन करना लेकिन बच्चे इन्हें प्रकट कर लेते हैं।

आज भी आपको ऐसे बहुत से छोटे बच्चे मिल जाएंगे जो गुरु से सीधा संदेश ले लेते हैं। महाराज जी कहा करते थे कि रूहानियत में तरक्की करने के लिए चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। एम.ए.पास को भी अनपढ़ बनना पड़ता है। जिस दिन बच्चा स्कूल में दाखिल होता है, एम.ए की तैयारी करता है बच्चे को पता नहीं होता कि मेरे टीचर में क्या गुण हैं, ये मुझे क्या बताएँगे या जो चीज बताएँगे उसके कितने फायदे हैं?

आपको पता ही है कि टीचर बच्चे की मदद करते हैं लेकिन परीक्षा तो बच्चे को ही देनी पड़ती है। जो बच्चा ज्यादा तवज्जो देता है और ज्यादा

मेहनत करता है वह टीचर की तवज्जो का ज्यादा हकदार होता है। यही कारण होता है कि हर बच्चे के पेपर एक जैसे नहीं होते और हर बच्चे के एक जैसे नंबर भी नहीं होते। उनकी अपनी मेहनत और लगन पर तरक्की होती है। अध्यापक तो सबको एक ही लगन से पढ़ाते हैं।

सन्तमत में भी यही चीज लागू होती है। सेवक जितनी लगन और मेहनत करता है वह उतना ही गुरु की दया का ज्यादा हकदार होता है। गुरु सब पर एक जैसी दया करते हैं और सबको एक जैसी ही तवज्जो देते हैं लेकिन तवज्जो ग्रहण करने वाले शिष्य जल्दी तरक्की कर जाते हैं।

प्यारेयो, जितने हम मेहनत के चोर और आलसी हैं, उतना ही हम अपनी मंजिल को दूर कर रहे हैं। हम जितना अपनी मंजिल को दूर कर रहे हैं उतना ही हम सुख, आनंद, शांति और अपने घर से दूर हो रहे हैं। रास्ता बताने वाले ने दया की, हमें सही और सीधा रास्ता बता दिया। उन्होंने यह भी उद्यम किया कि मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ लेकिन जो उस मंजिल पर पहुँचना चाहता है, उसे भी उतना ही पुरुषार्थ करना पड़ता है।

सन्तों ने दया की और हमें हमारे घर का रास्ता बता दिया जिसे हमारी राजकुमारी आत्मा भूल चुकी थी। वे इस राजकुमारी से वादा करते हैं कि मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि गुरु हर मंजिल पर उनके साथ होते हैं लेकिन रास्ता तो राजकुमारी आत्मा को भी उतना ही तय करना पड़ता है।

हाँ भई, आज पहले बच्चे कुछ भजन बोलेंगे, कुछ तो सचमुच के बच्चे हैं और कुछ बने हुए बच्चे हैं। हमें दोनों ही प्यारे हैं क्योंकि बच्चों जैसा मन बनाना भी आसान नहीं होता।

दिखादे दिखादे दिखादे दाता जी

दिखादे, दिखादे, दिखादे, दाता जी
तू दर्श दी झलक, दिखा दे दाता जी x2

1. *चिर दियां दिल विच, लग्गियां तांघां,*
सीने च वज दियां, बिरहों दियां सांगा, x2
बुझादे, बुझादे, बुझादे दाता जी,
तू जिंदड़ी दी तपश बुझादे दाता जी, दिखादे, दिखादे.....

2. *प्रेम तेरे विच, पगली होई,*
याद तेरी विच, जिंदड़ी खोई, x2
मिलादे, मिलादे, मिलादे, दाता जी,
सच्चा सतगुरु, आण मिलादे दाता जी, दिखादे, दिखादे.....

3. *असीं विछड़े हां, भरमां च आ के,*
आप तूं बैठा, सच्चखंड जा के, x2
हटादे, हटादे, हटादे, दाता जी,
साडे मन उत्तों, पड़दा हटादे दाता जी, दिखादे, दिखादे.....

4. *दर्श दिखाओ, कृपाल जी आ के,*
'अजायब' नूं ठारो, अमृत प्या के, x2
पिलादे, पिलादे, पिलादे, दाता जी,
सानूं अमृत नाम, पिलादे दाता जी, दिखादे, दिखादे.....

हाँ भई, बच्चे बहुत अच्छे हैं। आज इन्होंने सारा दिन प्रेक्टिस की, कभी अपनी मम्मी से पूछते थे कि हमारा **भजन** ठीक है? फिर मुझे ऊपर आकर सुनाते थे कि यह ठीक है? फिर कहने लगे कि आप पहले किसी और से **भजन** बुलवाना, हम बाद में बोलेंगे। इनकी मेहनत बहुत अच्छी है। हाँ भई, अब सुखपाल–सुखबीर भजन बोलेंगे।

नाम की महिमा अपरम्पार

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार x2

1. *पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,*
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश x2
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा.....

2. *नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,*
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, x2
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा.....

3. *प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,*
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, x2
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा.....

4. *नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,*
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि-कोटि यश गाया, x2
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा.....

बहुत अच्छे! किसी साहूकार ने बहुत ही लज़ीज़ खाने तैयार करवाए और मुनियादी करवा दी कि खाना मुफ्त है लेकिन जो खाना एक बार थाली में परोसा गया है अगर कोई उस खाने को झूठा छोड़ेगा तो उसे एक हजार रुपए जुर्माना देना पड़ेगा। शर्त यह है कि जवान लोग जितने मर्जी आ जाएँ पर कोई बुजुर्ग ना आए।

जब जवानों को यह पता चला तो उन्होंने सोचा कि इसमें कोई राज जरूर है कि जो यह जवानों को मुफ्त खाना खिला रहा है। हमें एक बुजुर्ग को साथ लेकर जाना चाहिए, वे एक बुजुर्ग को ट्रंक में बंद करके ले गए। उन्होंने आगे जाकर देखा कि खाने तो तरह–तरह के बहुत लज़ीज़ थे, छोड़ने का मन भी नहीं कर रहा था लेकिन डर भी था कि अगर थाली में खाना छोड़ा तो जुर्माना लगेगा।

एक जवान ने कहा कि हम बुजुर्ग को साथ लेकर आए हैं, उनसे तो पूछें? उन्होंने धीरे से ट्रंक खोलकर बुजुर्ग से पूछा कि इस खाने को खाने की युक्ति बताएं? उस बुजुर्ग ने कहा कि मैंने अंग्रेजों को खाना खाते हुए देखा है। बस आप बातें करते जाएँ, खाना जल्दी खत्म न होने दें और खाते रहें, उन्होंने वैसे ही किया। आपको पता ही है कि बातें करते जाएँ तो खाने का पता ही नहीं चलता।

आखिर साहूकार ने सोचा कि इनके पास जरूर कोई बुजुर्ग है। नौजवानों को ऐसी युक्ति कहाँ से आनी थी जो ये सारा खाना खा गए हैं। जब उनकी तलाशी ली तो उनके ट्रंक में से बुजुर्ग निकल आया। इसी तरह अब एक बुजुर्ग भी **भजन** गाएगा। हाँ भई, डॉ. मोलिना।

जो मांगे ठाकुर अपने ते

जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई–सोई देवे, x2

1. *चतुर दिसा कीनो बल अपना, सिर ऊपर कर धारयो,* x2
   कृपा कटाख अवलोकन कीनो, दास का दुःख विदारयो, x2
   जो मांगे ठाकुर.....

2. *हर जन राखै गुरु गोबिंद, राखै गुरु गोबिंद,* x2
   कंठ लाऐ अवगुण सब मेटै, दयाल पुरख बखशिंद, x2
   जो मांगे ठाकुर.....

3. *जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई–सोई देवै,* x2
'नानक' दास मुख ते जो बोलै, इहाँ ऊहाँ सच होवै, x2
जो मांगे ठाकुर.....

उस परमात्मा करण–कारण शब्द रूप दयालु कृपाल का धन्यवाद है जो हमारी तड़पती हुई आत्माओं की तपत बुझाने के लिए इस संसार में देह धारण करके आए। उन्होंने हमें अपने भक्ति करने का और अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। ✻✻✻

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा भजन में बिठाने से पहले दिया गया एक संदेश

किसी को अपनी तरक्की न बताएं

11 जनवरी 1986 मुम्बई

हम बहुत खुशकिस्मत हैं कि परमात्मा ने हमें इंसानी जामा दिया है। इंसानी जामें का यही फायदा है कि जो काम हम पशु–पक्षियों के जामें में नहीं कर सकते थे वह काम इंसान के जामें में कर सकते हैं, वह काम परमात्मा की भक्ति और परमात्मा का प्यार है।

हमारी आत्मा सतवंशी परमात्मा की पुत्री थी, यह अपने घर राजघराने को भूलकर मन के साथ दोस्ती लगाकर पापों के भार के नीचे दब गई है। जैसे–जैसे हमारी आत्मा परमात्मा से दूर होती गई वैसे–वैसे इस पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे भी चढ़ गए। अब इसे यह नहीं पता कि मेरा घर कौन सा है।

जब परमात्मा ने इस आत्मा को पापों के नीचे दबी हुई देखा तो परमात्मा सन्त रूप धारण करके इस संसार में आए और अपना भेद बताया। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सन्त रूप होय जग में आया, अपना भेद आप उन गाया।

जिस तरह हम गर्मी से बचने के लिए पहाड़ के नजदीक जाते हैं तो गर्मी घटनी शुरु हो जाती है। इसी तरह जब हम सन्त–सतगुरु से प्यार करते हैं तो उनका प्यार हमें दुनिया का प्यार छोड़ने में मदद करता है। वे हमारे प्यार के भूखे नहीं, वे तो खुद अपने गुरु के प्यार में लगे होते हैं।

जिसने भी फायदा उठाया सन्तों से प्यार करके ही फायदा उठाया है क्योंकि ऐसे हम दुनिया के प्यार को छोड़ नहीं सकते और दुनिया की मोहब्बत से ऊपर नहीं उठ सकते।

मुझे खुशी है कि आप घरों के सख्त बंधनों को काटकर कुछ दिनों के लिए घरों की जिम्मेदारियों को छोड़कर यहाँ परमात्मा की याद में इकट्ठे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ बैठे हैं, उसके मुत्तलिक ही सोचें।

सन्त–सतगुरु हमें जो सिमरन बताते हैं उसके पीछे उनका तप–त्याग और चार्जिंग काम करती है। वे हमें सुना–सुनाया या किताबों से पढ़कर सिमरन नहीं देते, उन्होंने जो खुद कमाया होता है वे हमें वही बताते हैं।

जब हम लगातार सन्तों का दिया हुआ सिमरन करते हैं, फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं तब हमें ध्यान की जरूरत पड़ती है, नहीं तो हमारी रूह बार–बार ऊपर जाएगी और नीचे आ जाएगी। जब हम लगातार तीसरे तिल पर पहुँचकर सन्तों के स्वरूप का ध्यान करते हैं तो आत्मा वहाँ ठहरना शुरु हो जाती है। फिर सेवक को इतने ध्यान की जरूरत पड़ती है कि वह अपने आप और अपने जिस्म को भूल जाए। तब गुरु और सेवक एक बन जाते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

नानक आपु छोडि गुर माहि समावै।।

गुरु स्वरुप तक हम सिमरन के जरिए ही पहुँच सकते हैं। जब अभ्यासी लगातार सिमरन करता है, अपने आपको भूल जाता है। हर जगह गुरु ही नजर आते हैं फिर हम सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार कर जाते हैं आगे गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है। सच्चा शिष्य वहीं जाकर बनता है। फिर सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है। गुरु एक मंडल से दूसरे मंडल तक शब्द के जरिए पार करवाते हैं, यहाँ पहुँचे हुए शिष्य से गुरु कहते हैं, ''तुम शब्द की डोर पकड़ो।''

आत्मा ने सारे मंडल 'शब्द' के ऊपर सवार होकर ही पार करने हैं। यहाँ पहुँचकर ही शिष्य के अंदर गुरु के लिए सच्चा प्यार, सच्ची मोहब्बत जाग जाती है क्योंकि वह आँखों से देख लेता है कि गुरु सेवक के लिए

अंदर क्या कर रहे हैं और कैसे एक मंडल से दूसरे मंडल तक गुरु अपनी दया करके पार करवा रहे हैं। यहाँ पहुँची हुई आत्मा यहाँ की खुशी बता नहीं सकती अगर बता देती है तो इसकी तरक्की रूक जाती है। जब आत्मा यहाँ पहुँचती है तो इस रूहानियत को इस तरह छिपा लेना चाहिए जिस तरह औरत अपने बदन को छिपाती है।

सितम्बर के ग्रुप में राजस्थान में दस दिन का प्रोग्राम रखा गया था उसमें एक आत्मा ने बहुत तरक्की की। जब अंदर गुरु स्वरूप ने दर्शन दिए तो वह बहुत खुश हुआ। उसने अंदर जो कुछ देखा था वह अपने ग्रुप लीडर को बता दिया, वह ग्रुप लीडर अभ्यास नहीं करता था। वैसे तो सतगुरु ग्रुप लीडर उन्हीं को बनाते हैं जिनके द्वारा कुछ देना होता है लेकिन बहुत से ग्रुप लीडर सुस्त हो जाते हैं, अभ्यास नहीं करते और मान–बड़ाई में ही रह जाते हैं।

उस ग्रुप लीडर के दिल में जलन हुई कि मैंने तो इससे कई साल पहले नाम लिया था लेकिन इसने मुझसे बाद में नाम लेकर तरक्की कर ली है। उस बेचारे प्रेमी की तरक्की रूक गई, उसने बाद में मेरे पास आकर बहुत पछतावा किया। **किसी को अपनी तरक्की के बारे में न बताएं।**

हमारे देखने का वाकिया है कि महाराज सावन सिंह जी की एक नामलेवा ने बहुत तरक्की की, उसने भी इसी तरह किसी को बता दिया। बाद में वह महाराज जी के सामने खड़ी होकर रोने लगी कि महाराज जी, मैंने जो कुछ प्राप्त किया था वह सब गायब हो गया है, मैं अंदर का भेद किसी को बता बैठी हूँ। महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि अगर हम किसी बदसूरत को शीशा दिखाएंगे और उसे अपनी शक्ल अच्छी न लगे तो वह शीश तोड़ देगा। अब तुम्हें मेहनत करनी पड़ेगी और आगे के लिए किसी को मत बताना। हमें अपनी तरक्की को जज्ब कर लेना चाहिए और छिपाकर रखना चाहिए।

जब हम तीसरे तिल पर शान्त मन के साथ एकाग्र होते हैं तो हमें जिस चीज की खोज है, हम जिसके लिए बैठ रहे हैं वह हमें अंदर ही मिल जाती है। हर एक ने मन को शान्त करना है। शान्त से भाव कि हमारे अंदर दुनिया के जो भी संकल्प–विकल्प उठ रहे हैं या बैठे–बैठे दुनिया को याद कर रहे हैं, उन्हें भुलाकर अभ्यास पर बैठें।

शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है, अभ्यास को बोझ न समझें बल्कि प्रेम–प्यार से करें। बाहर की किसी भी आवाज की तरफ तवज्जो न दें क्योंकि हर व्यक्ति अपने काम में मशगूल है। जब हर व्यक्ति अपने काम में लगा हुआ है तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम बाहर की किसी आवाज या लोगों के काम की तरफ तवज्जो न दें। मन को बाहर नहीं भटकने देना, तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। हाँ भई, सब अभ्यास पर बैठें।

✻✻✻

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

विदाई संदेश

22 मार्च 1997 साँपला

करण–कारण शब्द रूप दयालु कृपाल का धन्यवाद है जो हमारी तड़पती हुई आत्माओं की तड़प को बुझाने के लिए संसार में देह धारण करके आए और अपनी भक्ति करने का, अपनी याद में बैठने का मौका दिया। उनकी दया और इजाजत से यह भजन–सिमरन का जो कार्यक्रम रखा गया था, वह अब समाप्त है।

मैं आशा करता हूँ कि एक सप्ताह में आपको जो प्रेरणा दी गई है या जो इस मंडल पर हमारी कमियां बताई गई हैं उन्हें छोड़ना है। आत्मा के शीशे को साफ करने के लिए भजन–सिमरन करना बहुत जरूरी है।

मैं आप सबकी वापसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आप लोग अपने घर जाकर अपने परिवार को भी मेरा प्यार और हमदर्दी देंगे ताकि वे भी आपकी बात सुनकर कुछ फायदा उठाएं उन्हें भी कुछ भरोसा आए।

मैं आशा करता हूँ कि आप महाराज जी के वाक के मुताबिक घर जाकर डायरी रखेंगे और भजन–सिमरन करेंगे। आपको जो संसारिक जिम्मेदारियां मिली हैं उन्हें भी पूरा करेंगे। ***

धन्य अजायब

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

07, 08, 09, 10 व 11 जनवरी 2026

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

05, 06 व 07 दिसम्बर 2025

04, 05, 06, 07 व 08 फरवरी 2026

27, 28 फरवरी व 01 मार्च 2026

01, 02, 03, 04 व 05 अप्रैल 2026

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जब साँस नहीं आता अगर उस समय भी बंदे का ख्याल परमात्मा गुरु की तरफ जाता है तो उसकी संभाल जरूर होती है। ऐसी आत्मा धन्य है जिसने अपने कंत परमात्मा के साथ मिलाप कर लिया है।